
Nikhileshvarananda Chetana Mantrah

निखिलेश्वरानन्दचेतनामन्त्रः

Document Information



Text title : Nikhileshvarananda Chetana Mantrah

File name : nikhileshvarAnandachetanAmantraH.itx

Category : deities_misc, gurudev, mantra

Location : doc_deities_misc

Transliterated by : Dayavanti Agarwal

Proofread by : Dayavanti Agarwal

Latest update : August 29, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 29, 2026

sanskritdocuments.org



निखिलेश्वरानन्दचेतनामन्त्रः



ॐ पूर्वः सतां सहः श्रियै दीर्घो येताः वदाम्यै स रुद्रः स ब्रह्म
स विष्णवे सः चैतन्य आदित्याय रुद्रः वृषभो पूर्णः समस्ते
मूलाधारे तु सहस्रारे सहस्रारे तु मूलाधारे समस्त रोम प्रतिरोम
चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ प्राणतः दीर्घतः येतन्य दीर्घाम भूः
लोक भुवः लोक स्वः लोक महः लोक जनः लोक तपः लोक सत्यं लोक
मम शरीरे सप्तलोक जाग्रय उत्तिष्ठ चैतन्य कुण्डलिनी सहस्रार
जाग्रय ब्रह्मस्वरूप दर्शय दर्शय जाग्रय जाग्रय चैतन्य
चैतन्य त्वं ज्ञानदृष्टिः दिव्यदृष्टिः चैतन्यदृष्टिः
पूर्णदृष्टिः ब्रह्माण्डदृष्टिः लोकदृष्टिः अभिवृद्धये दृष्टि त्वं
पूर्णः ब्रह्मदृष्टिप्राप्त्यर्थं सर्वलोकदर्शनार्थं सर्वलोकदर्शय
सर्वज्ञान स्थापय सर्वचैतन्य स्थापय सर्वप्राणापान
उत्थान स्वपान देहपान जठराग्नि दावाग्नि वणवाग्नि सत्याग्नि प्रणवाग्नि
ब्रह्माग्नि इन्द्राग्नि अकस्माताग्नि समस्त अग्निः मम शरीरे सर्व-पाप-रोग-
दुःख-दारिद्र्य-कष्ट-पीडा नाशय नाशय सर्व-सुख-सौभाग्य-
चैतन्य जाग्रय ब्रह्मस्वरूपान् स्वामी परमहंसनिखिलेश्वरानन्दशिष्यत्वं
स गौरवः स प्राणः स चैतन्यः स व्याघ्रतः स दीप्यतः
स चन्द्रोमः स आदित्याय समस्त ब्रह्माण्डे विचरणे जाग्रय समस्त
ब्रह्माण्डे दर्शय जाग्रय त्वं गुरुत्वं त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं
शिवाऽहं त्वं सूर्यस्त्वं इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं यक्षस्त्वं यमाः त्वं
ब्रह्माण्डो ब्रह्माण्डोत्वं मम शरीरे पूर्णत्व चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ
उत्तिष्ठ पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रयामि ॥

——
Nikhileshvarananda Chetana Mantrah

pdf was typeset on August 29, 2026

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

